16वें साल पर तुम्हारे नाम माँ की चिठ्ठी

लेखिका : ज्योति परिहार
लेआउट एवं चित्रांकन : सीताराम
प्रथम संस्करण : माह- नवम्बर 2019, एक हजार प्रतियाँ प्रकाशित
प्रकाशक : 'किलकारी' बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना

KiLKARi
BIHAR BAL BHAWAN
Saidpur, Patna- 800 004 (Bihar)
☎ 9835224919, 7463878822, 0612-2661211
info@kilkaribihar.org, kilkari2008@yahoo.co.in
www.kilkaribihar.org www.facebook.com/kilkaribihar
kilkaribihar.blogspot.in www.youtube.com/kilkaribihar

ISBN 978-81-943926-0-6
9 788194 392606

Price : ₹ 20/-

मूल्यांकन
मेरे प्यारे बच्चे,
तुम्हारा सोलहवाँ साल आया है
इसलिए नहीं कि केवल
किताब के पन्नों में
उलझे रहो
चिंतामग्न रहो
ऊपर-नीचे के नंबरों से
परीक्षा के तनाव से
बाहर निकलो मेरे बच्चे
गणित
समाज
ध्ययन
हिन्दी शब्द
भूगोल के

यह तुम्हारी
अपार क्षमताओं की
केवल एक पक्ष का
मूल्यांकन है
इसलिए बस्ते के बोझ से
झुको नहीं
तन कर खड़े हो जाओ

विविधता का सौन्दर्य

विलक्षण हो तुम
भीड़ से अलग
तुम्हारी दृष्टि अलग
सोच अलग
विचार अलग
शिक्षक भले एक जैसा
व्यवहार करना सिखाएँ
पर अपना अलग स्वरूप
कभी नष्ट न होने देना
मेरे बच्चे
यही तुम्हारा सौन्दर्य है।

स्वयं पर भरोसा
परिंदों को उड़ने के लिए
विद्यालय नहीं जाना होता
शावक को शिकार का प्रशिक्षण
कहां दिया जाता !
वह इंसान ही है
जिसे न तो स्वयं पर भरोसा है
न अपने बच्चे की क्षमता पर
स्वयं पर अपना भरोसा
कभी मत खोना मेरे बच्चे ।

अपनी दृष्टि का विकास

अद्भुत है हमारा संसार
टेलीविजन-मोबाइल में
कम्प्यूटर और किताबों में
इसे ढूंढ़ने-समझने की बजाय
अपनी नजरें उठाओ
दौड़ाओ चारों ओर...
बाँहें फैलाओ
गहरी सांस लो
भर लो सुगंध
रोम-रोम में
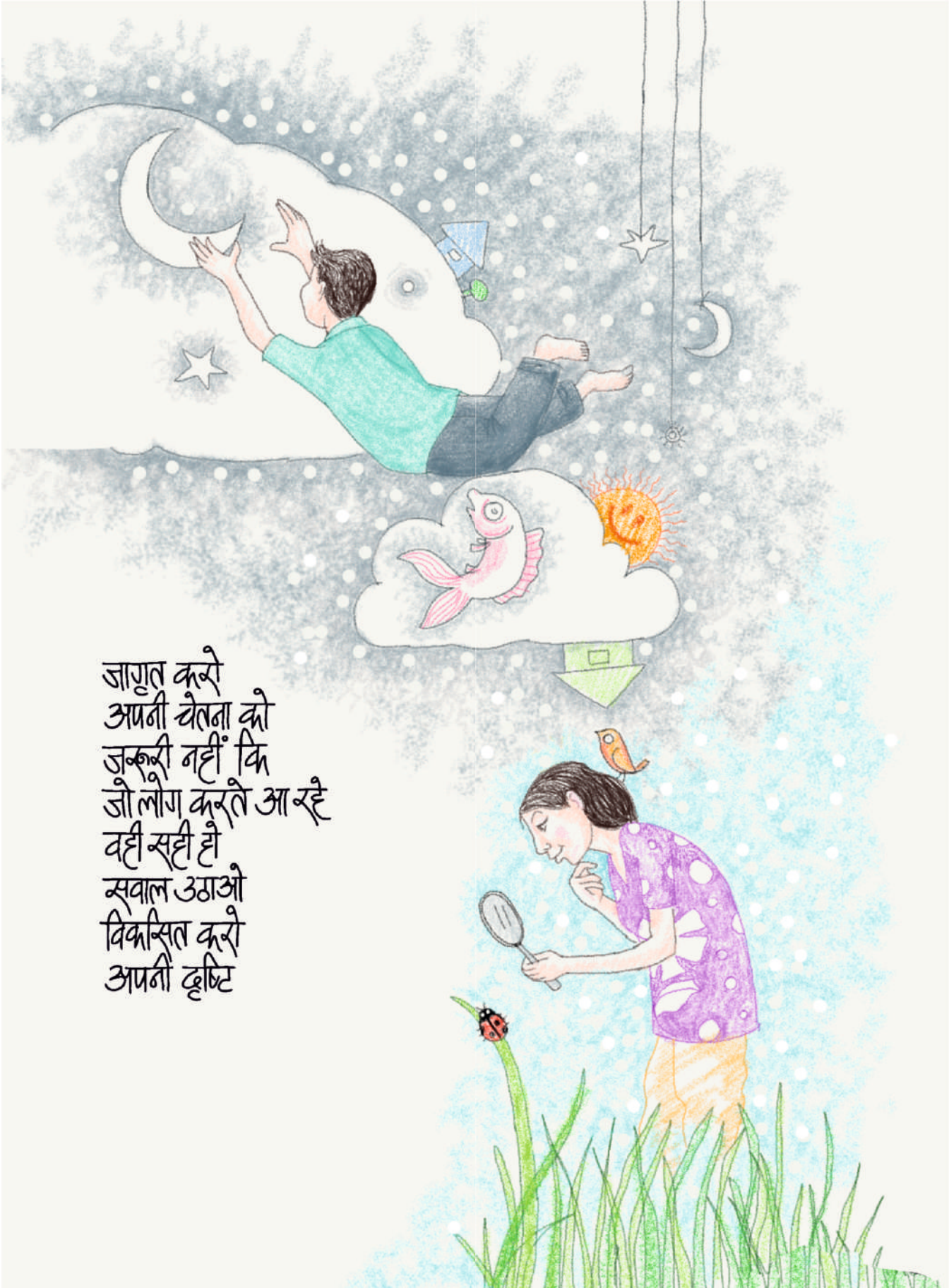
जागृत करो
अपनी चेतना को
जरूरी नहीं कि
जो लोग करते आ रहे
वही सही हो
सवाल उठाओ
विकसित करो
अपनी दृष्टि

प्रकृति से सीख

चलो, प्रकृति के
बदलते स्वरूप को देखें
थोड़ी मीठी छाँव
थोड़ी कच्ची धूप देखें
तुम्हें पता है
आँगन में बिल्ली ने
बच्चे दिए हैं
बहुत मुलायम...
उन्हें स्पर्श करें
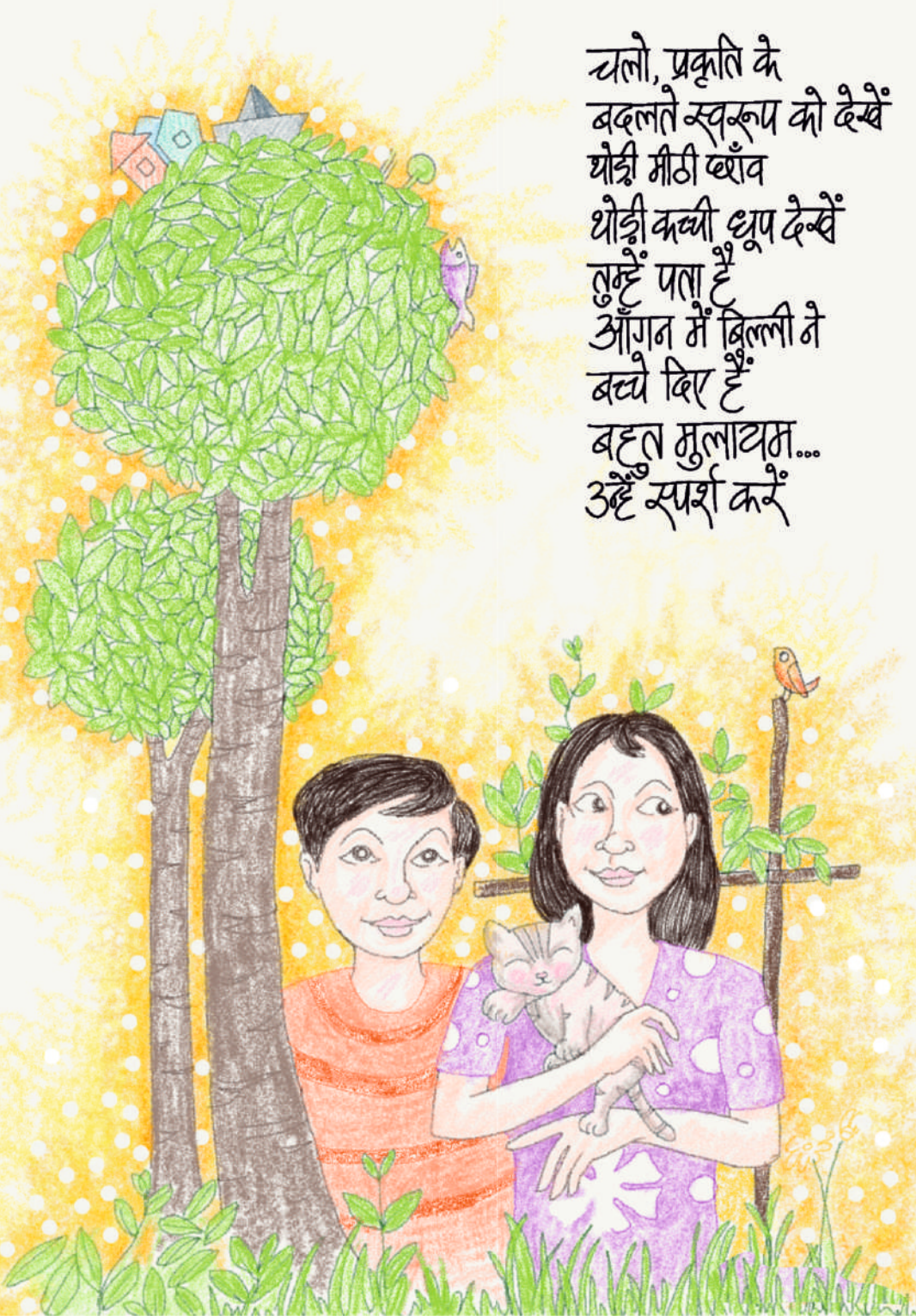
अपने बगीचे में
एक पीला फूल खिला है
कितना सुन्दर !
रंग देखें, सुगंध लें
उन पर मंडराती तितलियाँ
उमंग देखें, तरंग देखें
भर लें इन्हें अपनी आँखों में
मेरे बच्चे ।

असली चरित्र को समझें
सिनेमा के नकली चरित्रों से
स्वयं को निकाल कर
कभी कोशिश तो करें
अपने पड़ोसी को
जानने समझने की
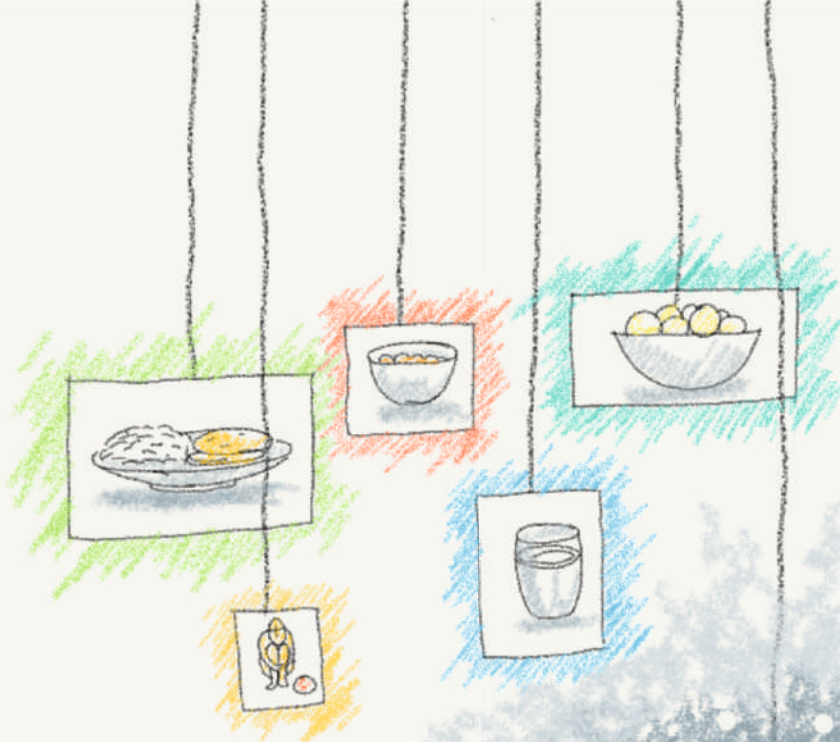
अपना निवाला उठाने से पहले
आस-पास झांक तो लें
कहीं कोई भूखा तो नहीं!
इस दुनिया को जरूरत है
मदद करने वालों की
प्यार करने वालों की
यह धन है तुम्हारे पास
बाँटो...जितना बाँट सको।
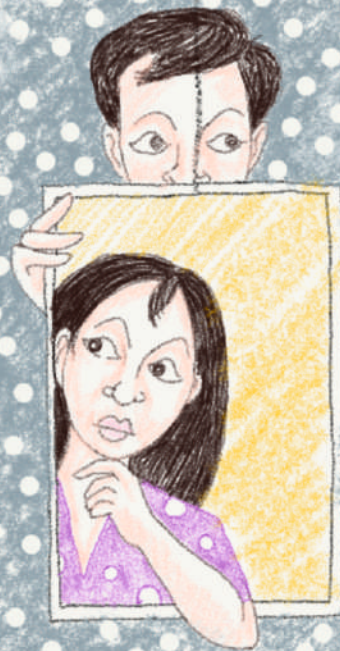
वर्तमान में रहें
देखो...
बारिश की बूंदें
टपकने लगी
ध्यान से सुनो
इस ध्वनि के संगीत को
तुम्हारा सोलहवाँ साल आया है
दरवाजे खोलो, पर्दे हटाओ
कोई लाख समझाये
उम्र मत छुपाओ
स्वागत करो मेरे बच्चे
महसूस करो
इसकी आहट को
फिर लौटकर यह उम्र
नहीं आएगी।
तुम्हारी माँ...
मेरे घर